بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 10.10 .25

मक्का पर विजय की बाद कुछ अभियानों एवं तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (अखा तिथि 10,1404 हश) 10.10. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत ﷺ की मक्का पर विजय प्राप्ति एवं मदीने वापस आने के बाद भी आप स. को कुछ अभियान चलाने पड़े, जिनका मैं वर्णन करूंगा।

एक वर्णन है कैस बिन सअद बिन उबादा नामक सरिय्ये का, यह आठ हिजरी में हुआ जब आंहज़रत ﷺ जअराना से मदीने वापस आए तो आप स. ने इसलाम की दावत देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की ओर दलों को रवाना किया, अतः महाजिर बिन अबी उमय्या रज़ी. को सनआ की तरफ़ तथा ज़ियाद बिन लुबैद रज़ी. को हिज़रे मौत नामक स्थान की ओर रवाना फ़रमाया, तथा एक सेना तैयार की जिसका अमीर क़ैस बिन सअद रज़ी. को नियुक्त फ़रमाया। आप स. ने क़ैस बिन सअद रज़ी. को चार सौ लोगों के साथ रवाना फ़र्माया ताकि वे यमन के सदाअ नामक क़बीले को इसलाम की दावत दें। हज़रत क़ैस रज़ी. खिज़रज के सरदार हज़रत सअद बिन उबादा रज़ी. के बेटे थे। ये बड़े विचारशील एवं शूर वीर घुड़सवार माने जाते थे। उदारता एवं दान शीलता में भी अति प्रसिद्ध थे। आप रज़ी. क़नात में पड़ाव डाले हुए थे की क़बीला सदाअ के एक व्यक्ति ज़ियाद बिन हारिस का उधर से गुज़र हुआ, ये कुछ समय पहले मुसलमान हो चुके थे, जब इनको पता चला कि यह सेना उनके कबीले पर आक्रमण करने जा रही है तो वहाँ से सीधा रसूले अकरम ﷺ की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि आप स. ने जो सेना

भेजी है उसको वापस बुलवा लें, मैं अपनी क़ौम की ज़मानत देता हूँ और उसके इस्लाम क़ुबूल करने का भी वादा करता हूँ। आप स. ने उसकी बात मानते हुए सेना को वापस बुलवा लिया। उसके बाद जब उन्होंने ने धीरे धीरे तबलीग़ की तो उनकी क़ौम ने इस्लाम भी क़ुबूल कर लिया, क्यूंकि हमला करना तथा जबरन मुसलमान बनाना तो इस्लाम की शिक्षा के भी विरुद्ध है, और आंहज़रत ﷺ के अपने तरीके एवं सुन्नत के भी विरुद्ध है। आप स. ने हज़रत ज़ियाद रज़ी. को ही उनका अमीर नियुक्त कर दिया।

सरिय्या हज़रत उयीना बिन हिसन रज़ी. फ़ज़ारी, यह सरिय्या मुहर्रम नौ हिजरी में बनू तमीम की ओर हुआ। इसका परिवेश यह है की आंहज़रत ﷺ ने हज़रत बिशर बिन सुफ़यान रज़ी. को बनू कअब की तरफ़ सदक़ात अर्थात ज़कात की धन राशि को वसूल करने के लिए भिजवाया। हज़रत बिशर रज़ी. के आदेश पर बनू खुज़ाअ: का माल हर एक दिशा से उनकी ओर जमा होने लगा। बनू तमीम जो मुसलमान नहीं थे, उन्हें ये माल अत्यधिक लगे तो वे कहने लगे की ये क्यूं अवैध रूप से हमारे माल ले रहा है? और अपनी तलवारें निकाल लीं। झगड़े एवं उपद्रव की इस अवस्था को देख कर हज़रत बिशर रज़ी. बिना किसी प्रकार की वसूली के स्वंय वहाँ से वापस चले आए और नबी करीम ﷺ को स्थिति से अवगत किया। आप स. ने उयीना बिन हिसन रज़ी. फ़ज़ारी को अरब के पचास घुड़सवारों के साथ बनू तमीम की ओर रवाना फ़र्माया। आप रज़ी. अपने साथियों सहित उस रेगिस्तान में पहुंचे जहां बनू तमीम ठहरे हुए थे और अपने पशु चरा रहे थे। जब बनू तमीम ने इस सेना को देखा तो सब कुछ छोड़ कर वहाँ से भाग गए। उनके ग्यारह पुरुष, ग्यारह महिलाएं तथा तीस बच्चे बन्दी बनाए गए, जिन्हें लेकर वे मदीना आ गए और नबी करीम ﷺ के आदेशानुसार हज़रत रमला सुपुत्री हारिस रज़ी. के घर ठहरा दिया गया।

बाद में बनू तमीम के अस्सी अथवा नव्वे निपुण लोगों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल आंहज़रत ﷺ की सेवा में उपस्थित हुआ। उस दल में उनके क़बीले के कुछ प्रवक्ता एवं प्रतिष्टित कवि भी शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल के अमीर ने कहा कि काव्य एवं सम्बोधन में हम आप स. की तुलना में उत्तम होना प्रकट करना चाहते हैं, अर्थात भाषण एवं काव्य में हमसे मुक़ाबला कर लें की किस क़ौम का प्रवक्ता एवं कवि उच्च कोटि का है। आप स. ने फ़रमाया की काव्य एवं भाषण में प्रतियोगिता करना मेरे आने का उद्देश्य नहीं है, मेरा उद्देश्य तो अल्लाह तआला की ओर बुलाना है, परन्तु तुम्हारे आने का यदि यही उद्देश्य है तो अपनी योग्यता का प्रदर्शन करो, हम उसका जवाब देंगे। इस मुकाबले के बाद अक़रा बिन हाबिस, जो इस दल के साथ आए थे, उन्होंने अपने साथियों के सामने साहस के साथ कहा की इनका प्रवक्ता हमारे प्रवक्ता से बढ़ कर है और इनका कवि हमारे कवि से अति उत्तम स्तर का है, ये हमसे बहुत आगे हैं। फिर जब ये लोग इस काम को पूरा कर चुके तो इन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। आंहज़रत ﷺ ने बनू तमीम के इस्लाम क़ुबूल कर लेने के बाद उनके बन्दी लौटा दिए और सबको पुरस्कृत भी किया।

फिर सरिय्या क़ुतबा बिन आमिर है, जो सिफ़र नौ हिजरी में हुआ। आंहज़रत ﷺ ने एक रिवायत के अनुसार उन्हें क़बाला नामक स्थान, जबकि एक रिवायत के अनुसार उन्हें बीशा नामक स्थान की ओर भेजा और उनको यह आदेश दिया कि सहसा उन पर हमला कर दें। अतएव मुसलामानों ने

अचानक उन पर हमला कर दिया, घोर युद्ध हुआ तथा दोनों पक्ष भारी संख्या में ज़ख़्मी हुए और विरोधी दल के अनेक लोग मारे गए और हज़रत क़ुतबा माले ग़नीमत में ऊँट,बकरियां तथा महिलाएं मदीने की ओर लेकर आए।

फिर सरिय्या ज़िहाक़ बिन सुफ़यान किलाबी रज़ी. का वर्णन है। यह रबीउल अव्वल नौ हिजरी में हुआ। आंहज़रत ﷺ ने हज़रत ज़िहाक़ बिन सुफ़यान किलाबी रज़ी. को किरता नामक स्थान पर उनके अपने क़बीले बनू किलाब की ओर भेजा। उन्होंने इस्लाम का सन्देश पहुँचाया, कि न्तु कबी ले वालों ने इनकार कर दिया और बात लड़ाई तक पहुँच गई। उन्होंने किरता वालों को पराजित कर दिया एवं माले ग़नीमत प्राप्त किया।

फिर सरिय्या हज़रत अलक़मा बिन मुजज़ज़ रज़ी. जद्दाह की ओर का वर्णन है। यह सरिय्या रबीउस्सानी और कुछ रिवायतों के अनुसार सिफ़र नौ हिजरी में हुआ। आंहज़रत ﷺ को सूचना मिली की हबशा के लोगों में से कुछ यौद्धा जद्दाह के तट पर उतरे हैं, जो कुछ रिवायतों के अनुसार वे मक्का वालों के विरुद्ध डाका डालना चाहते थे। आप स. ने हज़रत अलक़मा रज़ी. को तीन सौ लोगों का नेत्रित्व देकर उनकी ओर भिजवाया। उनको आप रज़ी. के आने का पता चला तो वे लोग अपनी नावों में सवार होकर समुद्र में भाग गए। आप रज़ी. ने एक द्वीप तक उनका पीछा किया।

हुज़ूरे अनवर ने इस अभियान के एक विशेष वृत्तांत का वर्णन फ़रमाया, जिसमें सेना के मुख्या का आग में कूद जाने का आदेश देने और उस पर कुछ लोगों के कूदने को तय्यार हो जाने, और कुछ लोगों की अवज्ञा का वर्णन मिलता है। जब इस बात का वर्णन नबी करीम स. से किया गया तो आप स. बड़े नाराज़ हुए और फ़रमाया की यदि वे उसमें दाख़िल होते तो क़यामत तक उसमें से न निकलते, चूंकि आज्ञा पालन तो प्रचलित बात में होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इस घटना को बयान किया है की जो बातें शरीअत के विरुद्ध हों उनमें आज्ञा पालन नहीं होता।

फिर सरिय्या हज़रत अली रज़ी. का भी वर्णन आता है, जो रबीउस्सानी नौ हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली रज़ी. को डेढ़ सौ अन्सार के साथ बनू तय के बुत फ़लस को गिराने के लिए रवाना फ़रमाया। आप रज़ी. ने सुबह के समय आक्रमण किया तथा उनके फ़लस नामक बुत को ढा दिया। बहुत सारे क़ैदी तथा पशु धन इत्यादि अपने क़ब्ज़े में किए। विख्यात दानशील व्यक्ति का यह कबीला था और कैदियों में उसकी बेटी सफ़ाना भी शामिल थी। उसका बेटा अदी जो कबीले का सरदार था, वह भाग गया और शाम देश की ओर निकल गया। आंहज़रत ﷺ ने हातिम की बेटी सफ़ाना को उसके बार बार आग्रह पर आज़ाद कर दिया। वह आज़ादी के तुरन्त बाद मुसलमान भी हो गई थी। आप स. की आज्ञा से वह अपने भाई अदी के पास शाम देश पहुँच गई। उसने अपने भाई को जितना जल्दी हो सका आंहज़रत ﷺ के पास मदीना जाने पर राज़ी कर लिया। रसूलुल्लाह ﷺ ने अदी के धर्म तथा उनके व्यक्तिगत मामलों के बारे में भी कुछ बातें कीं, जिनमें से कुछ बातें ऐसी थीं कि अदी के अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं थीं। अदी कहते हैं कि आप ﷺ के नैतिक व्यवहार तथा इन समस्त बातों को देख कर मैं मुसलमान हो गया। हज़रत अली रज़ी. के इस अभियान के कुछ देर बाद तय नामक कबीले का प्रतिनिधिमंडल आंहज़रत स. की सेवा में उपस्थित हुआ और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

फिर उकाशा बिन मिहसिन रज़ी. नामक सरिय्ये का वर्णन है जो जनाब की ओर रबीउस्सानी नौ

हिजरी में घटित हुआ। इस सरिय्ये की और अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हुई, केवल इतना ही वर्णन है की यह सरिय्या हुआ था।

हुज़ूरे अनवर ने तबूक नामक युद्ध के विषय में कुछ आरम्भिक बातें पेश फरमाईं जो रजब नौ हिजरी, सितम्बर 630 ई. में हुआ। यह आंहज़रत ﷺ के दिव्य जीवन का अंतिम युद्ध था। तबूक नाम के कुँए पर ठहरने के कारण इस युद्ध को तबूक नामक युद्ध कहा जाता है। क़ुरआन करीम में तबूक के युद्ध का वर्णन साअतुल उस्र अर्थात कष्टदायक घड़ी के नाम से किया गया है, क्यूंकि मुसलमानों को इसमें अत्यधिक कष्ट एवं तंगी का सामना करना पड़ा था। तबूक की लड़ाई का मूल कारण यही पता चलता है कि मक्का पर विजय एवं बनू हवाज़न जैसे शक्तिशाली कबीले घोर पराजय और अरब के आस पास के समस्त क़बीलों पर मुसलमानों को ग़लबा मिलने से यहूदी एवं ईसाई और मुनाफिक़ अपनी प्रत्येक कोशिश को असफल देख कर एक ओर उस समय की सुपर पावर अर्थात कैसरे रोम को तय्यार किया कि वह अपनी सेना भेजे ताकि मुसलमानों को ध्वस्त किया जाए और दूसरी ओर मुनाफ़िकों ने मदीने में यह झूठी ख़बरें फैलाना शुरू कर दीं की कैसरे रोम अपनी सेनाएं भेज रहा है जो मदीने में मुहम्मद ﷺ सहित समस्त मुसलमानों का सफ़ाया कर देगा। इस प्रकार से मुनाफ़िक़ तथा अन्य विरोधियों की इच्छा थी कि यह अधिक सम्भव है कि आंहज़रत ﷺ स्वंय ही सेना का मुक़ाबला करने के लिए मदीने से शाम की ओर निकल जाएंगे, और दोनों अवस्थाओं में यात्रा की कठिनाइयां अथवा कैसरे रोम से मुकाबला मुसलमानों और आंहज़रत ﷺ के विनाश को नऊज़ुबिल्लाह, विश्वस्त बना देगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया: इसका अब और अधिक लम्बा विवरण है जो इंशाल्लाह आगे बयान करूंगा।

अन्त में हज़ूरे अनवर ने फ़रमाया की आज मस्जिदे महदी, जो गोल बाज़ार, रबवा में है, उस पर आतंकवादियों ने हमला किया और हमारे पांच छ: लोग ज़ख़मी हैं, दो अत्यधिक गम्भीर अवस्था में हैं, उनके पेट में गोलियां लगी हैं, उनका आपरेशन इत्यादि भी हो रहा था, अल्लाह करे उनकी हालत ठीक हो गई हो, शेष ज़ख्मियों पर भी अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। एक आतंक वादी को भी हमारे सेकयोरिटी वालों ने मार दिया है और एक दौड़ गया है। अल्लाह तआला इन आतंक वादियों और क़ानून तोड़ने वालों और जमाअत के विरोधियों को जल्द पकड़े। पंजाब के मुख्य मंत्री एवं सरकार यह दावा कर रहे हैं की पंजाब में शत प्रतिशत अपराध कंट्रोल में हो चुके हैं और अब कोई अपराधी नहीं रहा, परन्तु अहमदियों पर जो आए दिन हमले होते हैं, हत्या एवं शहीद किए जा रहे हैं, उनके मालों को आगें लगाई जा रही हैं, इसको सम्भतः अपराध नहीं समझते। अल्लाह तआला इन सरकारों को भी बुद्धि दे और जल्दी ही अल्लाह तआला जमाअत के समर्थन में निशान प्रकट फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब